

শুভম সন্দেশ

এক রাজ্য - এক অঞ্চল

রাংচী, রবিবার 26 অক্টোবর 2025 | কার্তিক শুক্ল পক্ষ 06, সংবত 2082 | রাংচী এবং পটনা সে প্রকাশিত | গৰ্জ : 3, অংক : 196 | মুক্য ট 4, পৃষ্ঠা সংখ্যা : 12

ছুট পর বন রহা অন্ধুত সংযোগ, 4 রাশিয়ের পর পড়েগী ছঠী মড়া কী বিশেষ কৃপা...

শুভম সন্দেশ। রাংচী

নহায়-খায় কে সাথ মহাপর্ব ছুট কী শুভআত হো চুক্তি হৈ। ইস বার ছুট পর অন্ধুত সংযোগ বন রহা হৈ। 27 অক্টোবর তারীখ সামুদার কো অস্ত্রাচলগামী সুর্যো কী অর্থ্য দিয়া জাপ্যা। ইস সাল 27 অক্টোবর কো রেখ যোগ বন রহা হৈ, জো রাত 10:46 তক রহেগা। জ্যোতিষ কে মূলাবিক যথ বেহু শুভ ও দুর্ভুত হৈ। ইসকে সাথ হী সুকর্মা যোগ ভী পূরী রূপ রহেগা, জো কিসী ভী শুভ কার্য ও পূজা কে লিপি অচ্ছা মান জাত হৈ। ইস দৌরান কৌলুব ও আর তৈরুত করণ ভী মৌজুর হৈ, জো শুভ মানে জাত হৈ। পূর্বাংশা নক্ষত্র ভী ইসো সময় রহেগা, ইন সব সংযোগে মেঁ পূজা ও অর্থ্য দেন সে সৌভাগ্য, আরোয়া ও অর্থ সমৃদ্ধি মেঁ বুদ্ধি হোতো হৈ।

সিংহ রাশি: সিংহ রাশি কে জাতকো কে লিএ ছুট কা মহাপর্ব অতি শুভ পরিণম দেন গোলা হৈ। ব্যাপার মেঁ ইস সময় মুঠোকে কে অবসর বুঁড়ে। নে লাভ প্রাপ্ত হোগো, করিয়ার মেঁ পথন-নতি, অসম ও নর্জিম্বারিয়ো কে অসম মিলেগো। সাথ হী সমাজ মেঁ ও আর পরিবার মেঁ মান-সম্পর্কে মুহুর্দি হোগো। যাবিত কে জীবন মেঁ সকারাত্মক বৰ্দত্বা আপেঁ। হুব ক্ষেত্র মেঁ সন্তুলন ও অর সমৃদ্ধি মহসুস হোগো।

তুলা রাশি: আপকে লিএ ছুট কা মহাপর্ব নই সভাবনাএ লেক আপণ। ইস দৌরান বেরোজগা লোঁো কো রেজগা পিলেন কো সংসাধনা হৈ। আপকে রোস্ব মেঁ ভী বেহুত বদলাব দেখুন কো মিল সকর্তু হৈ।

করিয়ার মেঁ আগে বুদ্ধে কে নে এ মৌকো ভী আপকো মিল সকর্তু হৈ। পরিবারিক জীবন মেঁ আপ অচ্ছা সময় বিতায়ো ও মার মাতা-পিতা কো পূর্ণ সহযোগ ভী আপকো প্রাপ্ত হোগো। সমাজ কে কুছ গোপন্যায় লোঁো সে ইস দৌরান আপকো মুলকাত হোগো কী ভী সংসাধনা হৈ।

মকর রাশি: মকর রাশি কে জাতকো পর ছুট মিয়া কো বিশেষ কৃপা সামনৰ তক বনী রহেগো, সুর্য দুব কা আশীর্বাদ ভী ইস সময় জাতকো কে জীবন মেঁ সকারাত্মক বৰ্দত্বা আপেঁ। হুব ক্ষেত্র মেঁ সন্তুলন ও অর সমৃদ্ধি মহসুস হোগো।

দোহর 02.34 সে ভদ্রাবাস যোগ : নহায়-খায় কা দিন বিশেষ রূপ সে শুভ মান গোলা হৈ, শিবিবাৰ কো ভদ্রাবাস যোগ ভী বন রহা হৈ, জো দোহর 02:34 বজে সে পূরী রাত তক প্রভাবী রহা। ভদ্রাবাস যোগ কে দৌরান ভদ্রা রূপ্য লোক মেঁ রিশত হোগো, জিসেস ধার্মিক অনুষ্ঠান ওঁ পূজা-পাদ ফলদারী মানে জাত হৈ, ছুট পৰ্ব পৰ বিশেষ রূপ সে 4 রাশি বালে ব্যক্তিয়ো কো লাভ হোনে কী সংবাদনা অধিক হৈ।

সামান আংগে, ইসসে পদবন্নতি, সমান ও আপেশীর ক্ষেত্র মেঁ নে জিম্বারিয়া মিলেন কো সংবাদনা বৰ্দত্বা জাত হৈ। আধিক স্থিতি ভী পহলো সে মজবুত হোগো।

কুম রাশি: ছুট মহাপর্ব কুম রাশি কে জাতকো কে লিএ আত্ম শুভ সময় লোক কো প্রভাব কুম রাশি কে দৌরান কে দিবাজে খুলোগো, জীবন মেঁ নে অবসর সামনৰ আংগে, জাতক অপনে প্রয়াস ও আর

মেঁ মহেন্দ্র সে কেঁচু মুকাম হাসিল কৰ সকলেগো। আধিক দুষ্টি সে ভী যোগ সময় বুত শুভ হৈ, ধন কী কিসী ভী রহে গোলা হৈ। আত্মবিশ্বাস ও আর নেতৃত্ব ক্ষমতা বৰ্দেগো, মকর রাশি কে জাতকো কো রুক্ষ হুৰু কুম পৰে হাজাৰে, লোৱ সময় সে টালে গে প্রয়াস মেঁ সফলতা মিলেগো, করিয়ার মেঁ নে অবসর খুলোগো, করিয়ার মেঁ প্রোজেক্স যো জিম্বারিয়ো কে অবসর প্রাপ্ত হোগে, জিসেস পেশীবৰ জীবন মেঁ সোলুশ ও সফলতা মিলেগো।

হো দীনানাথ, কেলবা কে পাত পর...

রাংচী। ঝারখণ্ড-বিহার মেঁ ছুট এক পৰ্ব নহী বৰ্তক এক ইমোশন হৈ ও মহাপর্ব দিবগত ভৌজুপুরী লোক গাযিকা শারদা সিন্ধা কে ছুট গোলো কে বিনা মান জাত হৈ। পিছলে সাল ছুট কে পেলু শারদা সিন্ধা কা নিলো হো গয়া, লেকিন উনকো আজ অপৰ হৈ। শারদা সিন্ধা কা হো দীনানাথ ছুট গোলো হো গোলা হৈ। নে পূজা সে বৰ্দত্বা আপেঁ দেখুন কে লোক গোলো হো গোলা হৈ।

হো দীনানাথ... শারদা সিন্ধা নে কেঁজ ছুট গোলো হৈ, লেকিন উনকা গোলো হৈ। দীনানাথ সবসে জ্যাদা প্রিসিদ্ধ হৈ, বৰ্ষ 1986 মে শারদা সিন্ধা নে যে গোলো গোলা আৰু আজ ভী যুব হো গুৰু আৰু ঘাট পৰ ছুট কে মৌকো মিলত হৈ। পুৰুষ পৰ ইস গোলো কে সাধে পাচ কোড়ে পুৰুষ পৰ ছুট গোলো হৈ। শারদা সিন্ধা কা হো দীনানাথ ছুট গোলো হৈ। নে পূজা সে বৰ্দত্বা আপেঁ দেখুন কে লোক গোলো হো গোলা হৈ।

কেলবা কে পাত পর... মহাপর্ব ছুট মেঁ শারদা

মশহূর দিবাংগত ভোজপুরী লোক গাযিকা শারদা সিন্ধা কে ইন গোলো কে বিনা অধূরা হৈ মহাপর্ব

এক হৈ, ইস গোলো কো শারদা সিন্ধা নে 1986 মে গোলা থা, আজ ভী ইস গোলো কো সুনকুর রোংখে খেড়ে হো জাত হৈ। পিছলে পুঁজি ছুট মোৰীয়া... শারদা সিন্ধা কা ছুট পাত পাত পৰ পুলো হৈ পালি ছুট মোৰীয়া ভী উন গোলো মেঁ শামিল হৈ কে জুট ছুট পাত পাত পৰ পুৰুষ পৰ হুৰু হুৰু পৰ আব তক পুৰুষ পুৰুষ পৰ হুৰু হুৰু হৈ। যুব গুৰু দেখুন কে সবসে জ্যাদা গোলো হো গোলা হৈ।

তোহ বেঢ়াক ভেঢ়া হো... যে ছুট কা সবসে প্রিসিদ্ধ গোলো হৈ আৰু যুব গোলা শারদা সিন্ধা এপো হৈ ফিলমা গোলা থা, ইস গোলো কো আজ ভী যু-ত্যুবু পৰ সবসে জ্যাদা সুনা ও দেখা জাত হৈ। ছুট মোৰীয়া ইতন আজ... ইস গোলো কো রিলিজ হৈ পুৰু দে দশক সে জ্যাদা হো গোলো হৈ, লেকিন আজ ভী ইস খুব দেখা আৰু সুনা জাত হৈ।

কুখ্যাত অপরাধী প্রিস খান কে নাম পৰ দুকান মেঁ হংগামা!

পিস্টল সে উড়ানে চলা থা খোপড়ী রাংচী সে পটনা প্লাইট টিকট 5 গুনা মহাপর্ব

শুভম সন্দেশ। রাংচী

প্রিস খান-সুজীত সিন্ধা গোলো হৈ এক পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

নে ঘটনা মেঁ শামিল থিলোনা পিস্টোল, দো মোবাইল ফোন ও মোটোরাইড কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ। পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন্স হোম পৰ হো গোলা হৈ। পুলিস নে পাকিস্তান কে পাত পৰ হো গোলা হৈ।

সে পহলে, স্থানীয় নেশন

सूर्य उपासना का महापर्व: छठ पूजा की पौराणिक, ऐतिहासिक और वैशिष्ट्यक महिमा

निलय सिंह

लोक आस्था का पर्व छठ सिंह एक पर्व नहीं बल्कि महापर्व है, जो पूरे चारिं दिन तक चलता है। नहाय-खाय से इसकी शुरुआत हो चुकी है, जो खरना, अस्तवचनामी और उदयवान सूर्य की अर्थव देकर समाप्त होगा। ये पर्व साल में दो बार मनाया जाता है, वहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में। प्राचीनिक सुख-समुद्धि और मनोर्वाहित फल प्राप्ति के लिए ये पर्व मनाया जाता है।

छठ महापर्व की धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष की बात करने तो ये मुख्य रूप से सूर्य की आराधना का पर्व है। सनातन संस्कृत में प्रकृत देव सूर्य का महत्वपूर्ण स्थान है भारत में सूर्योपासना ऋषवेद काल से होती आ रही है। सूर्य और इसकी उपासना की चर्चा ज्यवेद और उपर्युक्त दोनों लेकर विष्णु पुराण, भगवान्पुराण और ब्रह्मवेदवैत्त पुराण आदि विस्तार से की गयी हैं। सूर्य के बालक और प्रदेव देव होने के कारण अलग-अलग रूपों में सूर्य की पूजा प्रारम्भ हो गयी थीं, लेकिन देवता के रूप में सूर्य की वन्दना का उल्लेख फलहीन बार ऋषवेद में मिलती है।

मार्केंड्ये पुराण के अनुसार सृष्टि रचना के बाद ब्रह्मा के पुत्र मरीच ने अपने पुत्र कल्पय की शारी अदिति से की और इन्हीं के पुत्र हुए सूर्य मरीच और अदिति के पुत्र होने के कारण सूर्य का मरिचम, मर्तांश या अदित्य कहा जाता है। सूर्योपासन दर्शन की होती है और मनानी गाथाओं के अनुसार भगवान् 'सोल' भी सूर्य की ही सूक्त है और हैलीयों के समतृत्य है।

जापानी गाथाओं के अनुसार जापान में भगवान् सूर्य माता के रूप में पूजे जाते हैं। सूर्य यानी 'अमरतारासू' भी पूजा की महिमा का गुणान किया है। यूनानी मान्यतानसार लियायस घोड़ पर विजयजामन रहते हैं और उनकी घोड़े से आग के समान ज्वालाएं निकलती रहती हैं। यूनानी गाथाओं के अनुसार भगवान् 'सोल' भी सूर्य की ही सूक्त है और हैलीयों के समतृत्य है।

जापानी गाथाओं के अनुसार जापान में भगवान्



सूर्यदेवा विज्ञान में भी सूर्य का महत्व है। बाद में सूर्यदेवा की मूर्ति पूजा का रूप सम्पन्न आया और अनेक स्थानों पर सूर्यमंदिर भी बनाये गये। आदिवासी संस्कृति में भी सूर्य को सिंगंबोंगा के रूप में पूजा जाता है।

भारत के बाद सूर्य-पूजा को सावधिक महत्व यूनान में दिया जाता है। यूनान के दास्तानिक लेस्टो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'रिपिक्लिक' में सूर्य यानी 'हैलीयोस' की पूजा की महिमा का गुणान किया है। यूनानी मान्यतानसार लियायस घोड़ पर विजयजामन रहते हैं और उनकी घोड़े से आग के समान ज्वालाएं निकलती रहती हैं। यूनानी गाथाओं के अनुसार भगवान् 'सोल' भी सूर्य की ही सूक्त है और हैलीयों के समतृत्य है।

मार्केंड्ये पुराण के अनुसार प्रथम देवासुर संग्राम में बाद ब्रह्मा के पुत्र मरीच ने अपने पुत्र कल्पय की शारी अदिति से की और इन्हीं के पुत्र हुए सूर्य मरीच और अदिति के पुत्र होने के कारण सूर्य का मरिचम, मर्तांश या अदित्य कहा जाता है। सूर्योपासन दर्शन की होती है और मनानी गाथाओं के अनुसार भगवान् 'सोल' भी सूर्य की ही सूक्त है और अदित्य और ज्यैष्ठ दोनों के बीच बिना के बिना जीवन सम्बन्ध नहीं है। अयुवेद, ज्यैष्ठ और

बाद एक मेला लगता है, जिसे 'सिसिन सेंगू' कहते हैं।

अमेरिकी गाथाओं के अनुसार विश्वर भर में कई युगों तक अंधकार छाया रहा था, जिसके कारण पृथ्वी पर जीवन असंभव था। उस काल में सूर्यवर स्वर्ग में निवास करते थे। मध्य अमेरिकी देशों के मूल निवासियों ने लिया निवास करते थे। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ। प्रियंवद पुत्र को लेकर समशन गये और पुत्र विद्याग में प्राण ल्याने लगे, उससे बहन ब्रह्माजी की मानस मूल प्रतिष्ठा से नेतृत्व लिया गया। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ।

मिस में उद्दीपनाम सूर्य की 'होरोसू', दोपहर के

सूर्य के 'रा' और असु होते सूर्य को 'ओसिरिस' कहते हैं। मिस की लोक मान्यताओं के अनुसार विश्वर भर में 'रा' का राज है, ये 'रा' बाज का सिर लिए पूरी दुनिया की खाली और असुरों से मानव जीति जी रक्षा करते हैं।

इरान में सूर्य को 'मित्र' कहा जाता है, यह एक

लगाने वाले कुंभ मेले की भाँति प्रत्येक 20 वर्ष के

रोमन लोग भी सूर्य का ही प्रतीक मानते हैं। वहीं, वैदिक साहित्य में 'मित्र' सूर्य को कहा जाता है। अजय सूर्य की उज्ज्वले को सोलान पावर के रूप में परिवर्तित कर प्रयोग किया जा रहा है।

छठ पूजा कब से हो रही है, इसे लेकर कई कथाएं प्रत्येक दिन हैं जो इस तरह हैं।

एक पौराणिक कथा के अनुसार मनु के पुत्र राजा प्रियंवद के कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुरोटिय यज्ञ करता उनकी उपासना करने का आदेश दिया। और माता संतान ने मुद्रित वैदिक विद्या के रूप में वज्राहुति के लिए बनायी गयी खीरी दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ।

प्रियंवद पुत्र को लेकर समशन गये और पुत्र विद्याग में प्राण ल्याने लगे, उससे बहन ब्रह्माजी की मानस मूल प्रतिष्ठा के छठे नेतृत्व लिया गया।

महाभारत से जुड़ी एक मान्यता के मुताबिक जब प्रांत विद्या को लेकर समय लिया गया।

महाभारत में ही सूर्यपूर्ण कर्ण की पूजा भी

विद्याकी प्रतिष्ठा है, कर्ण भगवान् सूर्य के अंश से जन्मे

थे और उनके परम भक्त थे और वे रोज़ सूर्योदय

और सूर्यास्त के छठे नेतृत्व करते थे।

सूर्य की कृपा से ही वह महान योद्धा बने। वे

सूर्य की अर्थ देने के लिए काबू दान भी करते थे और और पुत्र हुआ परन्तु वह पूजा करते थे।

राजा ने इच्छा पूरी करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे और और याचकों की इच्छा पूरी करते थे। और उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भी करते थे।

जब यह पूजा करते थे। इसके प्रभाव से उनके बाद दान भ



इस बार छठ पूजा
पर बन रहा है बेहद
ही दुर्लभ संयोग

देशभर में रह रहे व त्योहार को बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है और विवाली के 6 दिन छात छठ महापर्व आते हैं, जो कि विहार और पूजी उत्तर प्रदेश के लोगों का एक महत्वपूर्ण व लोक आस्था का पर्व है, छठ पूजा का द्रष्ट बहुत ही कठिन होता है और इस दैरोन वार दिनों को विभिन्न परंपराओं के साथ इस पर्व को मनाया जाता है, इसके बाद कार्तिक माह के शुक्रवार पाल की पर्वी तिथि के दिन सूर्य को अर्पण देने के साथ त्रत का पर्वण किया जाता है, इस साल छठ पूजा का पर्व 28 अक्टूबर 2025 को मनाया जायगा और इसकी पूर्णांतर 25 अक्टूबर की नवम्य-खत्य के साथ होगी, इस साल छठ पूजा पर कई दर्लभ संवेदन बन रहे हैं,

पूजा पर कम पूजन लक्षण वर्णन १८८-
पहला दिन, २५ अक्टूबर २०२५ - नहाय-
खाय, इस दिन दर्ती आन के बद शुद्ध व
सार्विक भोजन शहज करते हैं, इसमें मुख्य तौर
पर चना दाल और लीकी की सलजी होती है,
दूसरा दिन, २६ अगस्त २०२५ - खरना, छु-
पूजा के दूसरे दिन खरना होता है और इस
दिन दर्ती गुड़ की ओर बनकर उसे प्राप्त
स्वयं में शहज करते हैं, इस प्राप्त यो घाउण
करने के बाद उनका ३६ घंटे का निर्जला दात
आरंभ होता है,

तीसरा दिन, 27 अक्टूबर 2025 - संध्या अवधि, तीसरे दिन ज्ञानी दूकाने सूर्य को अवधि देते हैं। इस दिन बास के सूप में सभी व्राक्षर के फल व ठेकुआ रसायनर पानी में खड़े होते हैं सूर्य देव का पूजन होता है और इस दूकाने सूर्य को अवधि दिया जाता है।

अतिम दिन, 28 अक्टूबर 2025 - उग्री सूर्य को अवधि, छठा पर्व के अतिम दिन उग्री सूर्य को अवधि दिया जाता है और इसके साथ ही प्रत का समापन होता है। इस पौराण सूर्य देव से सुख-समृद्धि, स्यास्या और खुशहाली की कामना की जाती है।

छठ पूजा पर बन रहा है दुर्लभ संयोग
ऐदिक पायांग के 3न्यूसार 27 अक्टूबर की
रात 10 बजकर 46 मिनट तक रहि योग
रहेगा और इसे बेहद ही शुभ योग बाना गया
है, इसके अलावा छठ पूजा के दिन सुक्रपां
योग भी बन रहा है जो कि पूरी रात रहेगा
और इस योग में पूज करने से शुभ कल
प्राप्त होता है, इन्हाँ ही नहीं छठ पूजा के दिन
पूर्वोदय नक्षत्र भी उपर्युक्त रहेगा, इन सभी
योग व नक्षत्रों में सूर्य देव का अस्त्र देने से
सुख-समृद्धि, सतान प्राप्ति की कामना,
आरोग्य और सौभाग्य दी प्राप्ति होगी।

छठी पूजा का महत्व
 छठ पूजा के दौरान सूर्योदय और छठी में या की पूजा की जाती है। इस पूजा में भक्त मग्न नदी और पवित्र जल में सान करते हैं। महिलाएं निर्जला द्राव रखकर तुर्ह देव और छठी माता के लिए प्रासाद तैयार करते हैं। दूसरे और तीसरे दिन को सरना और छठ पूजा कहा जाता है। महिलाएं इन दिनों एक कठिन निर्जला द्राव रखती हैं। साथ ही वीथे दिन महिलाएं पानी में खड़े होकर उनको सूरज को अर्हता देती हैं और किस छत का पारण करती हैं।

छठ पूजा में भूलकर भी
न करें ये गलतियाँ

- उत्तर पर्याय के दिनों में भूलकर भी मांसाहारी चीजों का सेवन न करे। साथ ही उत्तर पूजा के दिनों में लहसुन व प्याज का सेवन भी न करे।
 - इस दौरान बढ़ रख रही महिलाएं सुर्य देव की अर्थव्यापार विना किंतु भी चीजों का सेवन न करें।
 - उत्तर पूजा का प्रशाद बेहड़ पवित्र होता है। इसे बनाते समय भूलकर भी इसे जूता न करें।
 - पूजा के लिए बास से बढ़े सूप और टॉफरी या ही इस्तेमाल करना चाहिए। पूजा के दौरान कभी स्टील या शीशी वे कर्तन प्रयोग न करें।
 - साथ ही प्रशाद शुद्ध पी में ही बनाया जाना चाहिए।



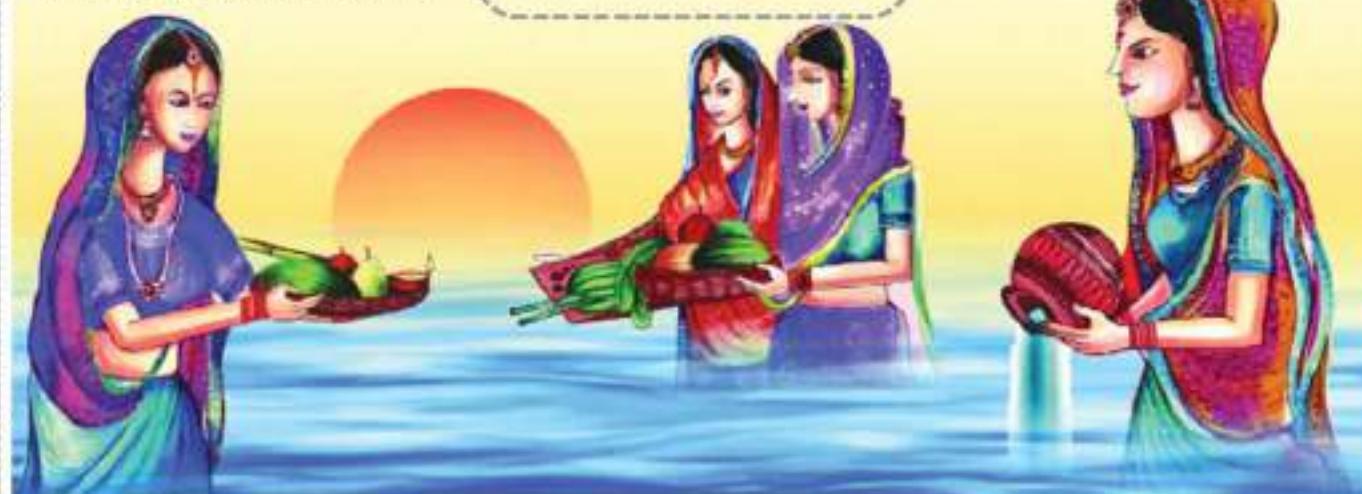
भगवान् सूर्य और छठ माता को समर्पित है छठ पूजा का व्रत

भगवान् सूर्योदय के प्रति भल्लों के अटल आस्ता का अनुष्ठान एवं छठ हिन्दू पंडाम के अनुसार वार्षिक मास के शुक्ल पक्ष के चतुर्थी से सप्तमी तिथि तक मनाया जाता है। मार्क्ष्योदय पूराण में छठ पर्व के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

यदि इस पर्व के नाम पर विद्याकर कर्ता तो स्पष्ट होता है कि इस पर्व के तिथिशुल्क के अपभ्रंश या देशज रूप यों भी इस पर्व की तज्ज्ञा के रूप में अपनाया गया है। जैसे कि इसे मुख्य रूप ये इसकी वहीं तिथी को होने वाली सूर्योदय की अर्धय के लिए जाना जाता है, इस प्रकार पर्व तिथी के विशेष महत्व के कारण उसका अपभ्रंश छठ के रूप में डामारे समाने आता है, यूं तो इस पर्व में डामारा के रूप में सूर्योदय की ही परिका है, पर तिथी के कारण ये छठ नाम ही प्रतिष्ठित हो गया है। चार दिन तक बलने वाले इस पर्व ने मुख्यतः वहीं और सामाजी के अर्धय पर ही विशेष महत्व माना जाता है ऐसे तो यह पर्व वर्ष में दो बार वैष और कार्तिक मास में मनाया जाता है, पर इनमें तुलनात्मक रूप से अधिक प्रसिद्धि कार्तिक मास के छठ की ही है, हिन्दू कैलेंडर के अनुसार कार्तिक मास में दीपावली ही तने के बाद इस चार विशेष पर्व का आगाज ही जाता है, कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी से शुरू होकर ये पर्व कार्तिक शुक्ल सप्तमी तक भौंत ती अर्द्ध देने के साथ समाप्त होता है, इस चार विशेषीय पर्व का आगाज 'नहाय खाय' नामक एक रसम से होता है, इसके बाद खसना, फिर सांझ की अर्धय व अंततः भौंत की अर्धय के साथ इन पर्व का समाप्त हो जाता है, यूं तो ये पर्व चार विशेषीय होता है, पर मुख्यतः वहीं और सामाजी के अर्धय का ही विशेष महत्व माना जाता है, जहाँ व्यक्ति द्वारा पानी में खड़े होकर सूर्य देव को ये अर्ध दिव

जाते हैं, इसी क्रम में उत्तेजनायी हीला किए संभालतः ये अपने आप ने ऐसा पाहला वर्ष ही जिसमें किए हुए और उगते दोनों ही सूर्यों को अर्थय दिया जाता है, उनकी वंदना की जाती है, तत्त्व-सुधार की इन दोनों अर्थों के पीछे हमारे समाज में एक आस्था काम करती है,

दी आस्था ये है कि सूर्योदय की दी पनियाँ हैं- कृष्ण
ये रस्म पुरुष द्वारा ही किया जाना आवश्यक
भास्त के अधिकारिक पर्वों की एक विशेषता ये भी है कि वो किसी न किसी वीरजिक मानवता से प्रभावित होते हैं, इस के विषय में भी ऐसा ही है, इसके विषय में वीरजिक मान्यताएं तो ऐसी हैं कि अब से काप्ती पहले तामायण अथवा महाभारत काल में ही छठ पूजा का आरम्भ हो चुका था, कोई कहता है कि सीता ने ती कोई कहता है कि कुती या द्रोणी ने सर्वधर्म ये छठ प्रत और पूजा की थी, एक महात्मा यह भी है कि सर्वप्रथम महाभारत कालीन सूर्योदय कर्ण ने सूर्य का पूजन किया था, जिसके बाद यह इम्परायर चल पड़ो, अब जो भी हो, पर इनका अवश्य है कि अमर आपको भास्तीय बूँदार, परम्परा, शालीनता, सद्गति, और आस्था समेत सारसूक्तिक समय की छठा एकसाथ देखनी हो तो अवश्य के दिन किसी छठ प्रत पर जले जाएं, अप्प जो देखेंगे वे अपने देखने के लिए आवश्यक होंगे।
इस पर्व का प्रभव भास्तीय राजनीति में भी व्यापक रूप से देखने को मिलता है, अब यूपी-विहार तो खेड़ इस पर्व के गहर ही है, तो वहाँ तो नेताओं द्वारा इसके लिए धारों पर साप्त-साप्ताहिं और सुरक्षा आदि दी चल-दीवाल व्यवस्था की ही जही है, साथ ही राजनीति दिली, महाराष्ट्र जैसे तमाम राज्यों जहाँ यूपी-विहार के लोगों की बड़ी संख्या में भौतिकी है, मैं भी सरकारे छठ के पूरी तैयारी करती हूँ, विहार में तो अवश्य मुख्यमन्त्री युद्ध ही सपरिवार छठ पाट पहुँचकर पूजन-आर्योदय आदि करते हैं, बिहार के पूर्व मुख्यमन्त्री लालू पायां के बाहे होने पाला छठ का भासी भरकम आर्योजन तो खेड़ देश भर में ही प्रसिद्ध है, मोहन तीर पर जनसामान्य की मान्यता है कि ये सिर्फ रिक्तीय का पर्व है और काफी छद्द तक ये मान्यता सही भी है, पर इसके जात ही दे भी एक सत्य है कि पुराणा के बिना इस पर्व की गाह इसमें अधूरी ही रुह जारी रही, उदाहरणार्थ इस पर्व की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रस्म जितनमें कि धर के पुराष द्वारा पूजन सामग्री का डाल निर पर उठाकर छठ के छठ तक ले जाया जाता है, पुराष के होने की स्थिति में ये रस्म पुरुष द्वारा ही किया जाना आवश्यक और उठाकर माना गया है, तिहाज इसे निकल कियों का पर्व कहना किसी लिहाज से सही नहीं लगता।



ਕੌਨ ਹੈ ਸਾਂ ਪਈ ਫੇਰੀ

छठ पर्व पर सूर्य आराधना एवं बही देवी के पुजन या विशेष महत्व है। लेकिन यहा आप जानते हैं कि बही देवी कौन हैं और क्योंकि पढ़ा उनका यह नाम?

वराजसल ना बहा दवा, ना कात्यायन का हु रूप ह और
मा कात्यायनी, दुर्गा का छठा अवतार है। शहस्रों के
अनुसार देवी ने कात्यायन जैषि के घर उनकी पुत्री के स्वप्न
में जन्म लिया, इस कारण इनका नाम कात्यायनो पड़ गया।
पहीं तिथि के अलावा नवरात्र के छठे दिन कात्यायनी देवी
की पूरे शब्द भाव से पूजा की जाती है।

कैसा है षष्ठी देवी का स्वरूप
 विवरण कात्यायनी देवी का शरीर सोने के समान
 घमण्डीता है। चार झुजा वारी मां लाल्हायनी सिंह यर सज्जा
 हैं। अपने एक हाथ में तलवार और दूसरे में अपना पित्र।

पृथ्वी कमल लिये हुए हैं। अन्य दो हाथ वरमुद्रा और अभ्यमुद्रा में हैं। इनका बाहन सिंह है। देवी कात्यायनी के नाम और जन्म से जुड़ी एक कथा प्रसिद्ध है।

क्यों पड़ा देवी का नाम कात्यायनी

एक कथा के अनुसार एक बन में कत नाम के एक महार्षि थे उनका एक पत्र था जिसका नाम कात्य रखा गया। इसके पश्चात कात्य गोत्र में महार्षि कात्यायन ने जन्म लिया।

उनकी कोई संतान नहीं थी। माँ भगवती को पुत्री के रूप में पाने की इच्छा रखते हुए उन्होंने परामर्श दी कठोर तपस्या की। महार्षि काल्याशन की तपस्या से प्रसन्न होकर देवी ने उन्हें पुत्री का तरददान दिया। कुष समय शीतलने के गद्द राक्षस महिषसुर का अत्यावार अत्यधिक बढ़ गया। तब ब्रिद्धों के तेज से एक कान्या ने जन्म लिया और उसका रथ कर दिया। कात्य गोत्र में जन्म लेने के कारण देवी का नाम काल्याशनी पड़ गया।

धृष्टा दवा का सरल मत्र

कात्यायनी शुभं दद्या देवीं दानवं घातिनि
मां कात्यायनीं अपोषं फलदायिनीं मानीं गई हैं। शिक्षा प्राप्ति
के क्षेत्र में प्रयात्तर भक्तों को माता की अवश्य उपासना
करनी चाहिए।



छठ पूजा पर तमिलनाडु में मनाते हैं सूरसम्हारम पर्व?

उत्तर भारत में जहां छठ पूजा का पर्व मनाया जाता है जिसमें सूर्योदेव की पूजा के साथ ही छठ पैदा की पूजा की जाती है वही दर्शन भारत में इसी दिन सूर्यसम्हारम पर्व मनाया जाता है जिसमें भगवान कार्तिकीय की पूजा की जाती है। यथा है छठ पर्व को मानाने की पीठ की कथा भगवान कार्तिकीय की दर्शन भारत में मुख्यतः और रुक्मिणी का जाता है। इसीलिए यही शिरि का नाम रुक्मिणी के नाम में बदला जाता है। तत्परिका यह कि शिरि को रुक्मिणी का नाम दिया जाना चाहिए।

स्कूल बढ़ा के लिए मेरा जाना जाता है। कातक माह के शुक्रवर पर्व का बढ़ा का कलन बढ़ा कहत है। यह तमिल किन्नूजों का प्रमुख त्योहार है। इस पर्व की शुक्रांति कातिक माह की शुक्रवर प्रतिपदा तिथि रही हो जाती है जिसका सम्बाधन बढ़ी के दिन होता है। यानी छह दिवसीय उत्तराश का पालन किया जाता है। बढ़ी के दिन पर्व का समापन होता है जिसे सुरसम्भारम दिवस कहा जाता है। मन्त्रज्ञान के विभाग मुरुगन ने सुरसम्भारम के निम असुर सुरवधन को युद्ध में पराजित किया था। इसीलिए उत्तराश के दूर अक्षर्ष की धिक्य का सादेश के रूप में प्रतिपूर्व बुरसम्भारम का त्योहार मनाते हैं।

सूरसम्भारम् के आगे दिन विरु गत्वाणम् मनसा जाता है। विरु इन्द्रुर मुरागन मदिर में कन्द पूर्णा का वैद्यहर धूमधाम से मनसा जाता है।

